श्री कुलजम स्वरुप साहेब

श्री तारतम वाणी

14 ग्रंथ = 14 अंग

श्री तारतम वाणी

14 ग्रंथ = 14 अंग

	नाम	अंग	स्थान
1.	रास	चरण	हब्सा (जामनगर)
2.	प्रकाश गुजराती	पिंडुरियाँ	हब्सा, दीपबंदर
3.	खटरुति	घूँटन	हब्सा (जामनगर)
4.	कलस गुजराती	जांघ	हब्सा,दीपबंदर, सूरत
5.	प्रकास हिन्दुस्तानी	पिंडुरियाँ	अनूपशहर
6.	कलस हिन्दुस्तानी	जांघ	अनूपशहर
7.	सनन्ध	कमर	अनूपशहर
8.	किरन्तन	कर	विभिन्न स्थान
9.	खुलासा	नाभि	पन्ना जी
10.	खिलवत	उदर	पन्ना जी
11.	परिकरमा	हृदय	पन्ना जी

प्रेम प्रणाम जी

श्री तारतम वाणी

14 ग्रंथ = 14 अंग

	नाम	अंग	स्थान
12.	सागर	कंठ	पन्ना जी
13.	सिनगार	मुख	पन्ना जी
14.	सिन्धी	नासिका	पन्ना जी
15.	मारफत सागर	श्रवण	पन्ना जी
16.	छोटा कयामतनामा	नयन	पन्ना जी
17.	बड़ा कयामतनामा	नयन	चित्रकूट

यह वाणी अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी का ही वाङमय (ज्ञानमय) स्वरूप है, अर्थात् श्री प्राणनाथ जी तथा इस ब्रह्मवाणी के स्वरूप में कुछ भी भेद नहीं है। इस वाणी के चौदह अंग श्री जी के चौदह अंगों के समतुल्य हैं।

प्रेम प्रणाम जी